classmate

Date
Page

संस्कृति एवं सभ्यता में अन्तर
Difference between Culture and civilization

मैकाइवर एवं पेज ने सभ्यता एवं संस्कृति के बीच मुख्य रूप से चार अन्तर बताए है जो निम्नलिखित है —

(1) सभ्यता का ठोस माप संभव है पर संस्कृति का नही :— सभ्यता की वस्तुओं का संबंध उसकी उपयोगिता एवं कार्यकुशलता से है, इसलिए इसका माप आसानी से लिया जा सकता है। जैसे — हम आसानी से कह सकते है कि बैलगाड़ी की तुलना मे साइकिल ज्यादा तेज चल सकती है। साइकिल की तुलना मे मोटरकार अधिक तेज चल सकती है और मोटरकार की तुलना मे हवाई जहाज ज्यादा तेजी से चल सकता है।

दूसरी तरफ संस्कृति का हम उतनी आसानी एवं ठोस ढंग से मूल्यांकन नहीं कर सकते है, क्योंकि संस्कृति को मापने के लिए कोई वस्तुनिष्ठ मापदण्ड नहीं बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए यह कहना कठिन है कि कालिदास की तुलना में शेक्सपियर बड़े नाटककार थे। उसी प्रकार हम यह कह नही सकते है कि आइंस्टीन, कार्ल मार्क्स से बड़े चिन्तक थे।

(2) सभ्यता मे निरन्तर प्रगति होती है, पर संस्कृति मे नही :— सभ्यता उन्नतशील है और वह एकदिशा मे निरन्तर प्रगति करती है जब तक कि उसके मार्ग मे कोई बाधा न आ जाये। सभ्यता की प्रत्येक उपलब्धि का पूरा पूरा लाभ उठाने एवं उसमें सुधार करने का कार्य तब तक जारी रहता है, जब तक कि उसमें श्रेष्ठ कोई नया आविष्कार न हो जाये जैसे —

बैलगाड़ी से प्रारम्भ होकर आज हमने रेल, बैलगाड़ी से रेल तक, वायुयान एवं रॉकेट तक निर्माण कर लिया है। आज हमें जितनी भौतिक उन्नति दिखाई पड़ती है, वह सभ्यता की प्रगति का ही उन्नति का परिणाम है। सभ्यता के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति होती रहती है। हर सभ्यता अपनी पिछली सभ्यता को पीछे छोड़ देती है।

संस्कृति के साथ प्रगति की बात नहीं जोड़ी जा सकती है। यह कहना बहुत कठिन है कि कोई संस्कृति उन्नति के रास्ते पर है या अवनति के रास्ते पर। संस्कृति सरल या जटिल कुछ भी हो सकता है

③ सभ्यता आसानी से हस्तांतरित हो सकती है, पर संस्कृति नहीं :—

सभ्यता और संस्कृति के बीच एक और फर्क यह है कि जिसे हम सभ्यता कहते हैं वह आसानी से एक हाथ से दूसरे हाथ में जा सकती है, जैसे — टीवी, रेडियो, घड़ी, कलम, वस्त्र, मूर्ति इत्यादि को हम एक हाथ से दूसरे हाथ में हस्तान्तरित कर सकते हैं। इतना ही नहीं हम उन चीजों को पहले से बेहतर भी बना सकते हैं। लेकिन संस्कृति उतनी आसानी से एक जगह - से - दूसरी जगह नहीं जा सकती है। हम विभिन्न किस्म की कलाओं कानूनों, ज्ञान और विज्ञान एवं प्रविधियों के बारे में आसानी से नहीं सीख सकते हैं। हर कोई शेक्सपीयर एवं कालिदास जैसे नाटककार, प्रेमचन्द जैसा उपन्यासकार और मिर्जा गालिब जैसा शायर नहीं हो सकता

और नहीं कर आसानी से उनकी कृतियों में सुधार लाकर उसे बेहतर बना सकता है। सभ्यता संस्कृति का एक माध्यम है जैसे — रेडियो और टी॰ वी॰ के द्वारा विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक चीजों के बारे में हम ज्ञान हासिल करते हैं, उसी तरह मैकाइवर और पेज के अनुसार — "सभ्यता संस्कृति का वाहक है।"

④ सभ्यता बिना परिवर्तन के ग्रहण की जा सकती है, पर संस्कृति नहीं। —

सभ्यता की चीजें समाज के एक हिस्से से दूसरे हिस्से या एक देश से दूसरे देश में बिना किसी परिवर्तन के पहुँचायी जा सकती है। आज अमरिका का बना हुआ हवाई-जहाज या कम्प्यूटर बिना किसी परिवर्तन के एक देश से दूसरे देश को भेजा जा रहा है। उसी तरह से जापानी रेडियो, टी॰ वी॰, कलम, घड़ी आसानी से हर जगह पहुँच रही है, लेकिन अमरिका या जापानी संस्कृति उसी रूप से दूसरे देशों में नहीं पहुँच रही है। जब संस्कृति एक जगह से दूसरे जगह पहुँचती है तो उसमें थोड़ा परिवर्तन आ जाता है। इसलिए एक ज्वलन्त उदाहरण यह है कि भारत में अंग्रेजी इंग्लैण्ड से आयी है, पर भारतीय अंग्रेजी ब्रिटेन अंग्रेजी से काफी भिन्न है। स्थान और स्थिति के बदलाव होने के कारण संस्कृति में भी स्वाभाविक रूप से बदलाव होता है पर सभ्यता में कोई बदलाव नहीं होती है सभ्यता की चीजें उसी रूप में आती जाती रहती है जिस रूप में उसका निर्माण हुआ है।